मनुष्य बनो

انسان بنو

मानवता के मुख्य नियम

बा०मू०
५-[illegible]५

निष्काम कर्म [illegible] पालन,

R.S.

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

❋ मनुष्य बनो ❋

वर्ष २७	श्रावण सं० २०३४ वि० अगस्त, १९७७	संख्या ११

❋ शब्द ❋

(संसारी को उपदेश)

धीरे धीरे बैल हाँकरे गाढ़ीवान ॥ टेक ॥

गाढ़ी तेरी रंग बिरंगी, बैल हैं शोभादार ।
हांकन वाला छैल छबीला, चढ़ने वाले गंवार ॥

गाढ़ी अटकी भवसागर में, जाना है भव पार ।
धन धन वह साहब सच्चा खेय लगाये किनार ॥

काजी छूटे बजार में, कसवा फिरे पुकार ।
बन्धू गढ़ में दस दरबाजे, उतर गये सरदार ॥

सिधरी होय सबे रस चाखे, कछुआ भोग लगावे ।

सम्पादकीय

अमृत वाणी

इस संसार में मनुष्य अपने सुख के लिये अनेक साधन करता है, अनेक प्रकार से प्रयास करता है और जो भी उससे सम्भव उपाय होते हैं उनको अपनाने की चेष्टा करता है। सम्पत्ति, परिवार तथा इष्ट मित्रों की कामना करता है। मकान, सवारी तथा सुख के लिये जो भी आवश्यक समझता है जुटाता है। परिणाम यह होता है कि ज्यों ज्यों उसकी इच्छा पूरी होती जाती हैं माँग उतनी अधिक से अधिक तीव्र होती जातीं है अर्थात उसकी जिज्ञासा कभी पूरी होती ही नहीं।

परिणाम क्या होता है कि इस सब सामग्री को इकट्ठा करने के लिये किसी से दुश्मनी करनी पड़ती है, द्वेष भी पैदा होता प्रति-द्वन्दता भी पनपती है और संघर्ष भी होता है।

कई तो इस भौतिक सामग्री के लिये अनुष्ठान भी करते हैं, देवी देवताओं की पूजा करते हैं तथा जो भी आवश्यक समझा गया सभी प्रयत्न किये गये। मगर फिर भी सब कुछ प्राप्त करके अशान्त ही रहते हैं।

कारण क्या है सुख का आधार संसार के पदार्थों से जोड़ लिया है जो केवल क्षणिक है, दुख का स्त्रोत है। मगर इसके बिपरीत दूसरी स्थिती क्या है—परम आनन्द। सूर्य के निकलते ही तारागण स्वयं ही नष्ट हो जाते हैं। अन्धकार ढूढ़ने पर भी दिखाई नहीं देता है। उसी प्रकार संत सुख मिलने से विषय सुख की लालसा स्वयं ही मिट जाती है चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश दृष्टिगोचर होता है जिसमें मनुष्य विलीन होकर समस्त कामनाओं से रहित हो जाता

परम दयाल महाराज पं० फकीरचन्द जी का एक पत्र सम्पादक के नाम

प्यारे प्रभूदयाल ! राधास्वामी

शक्ति तुम में ! प्रभु तुम में ! राम तुम में ! गुरु तुम में ! इन्सान अपने मन के चक्कर में आया हुआ है। कुछ न कुछ समझता रहता है।

निर्भय होकर काम करो मेरी खुशामद नाजायज नहीं करनी। जितने लोगों को सिद्धी शक्ति प्राप्त हुई है या चमत्कार हुये यह सब उनका अपना विश्वास श्रद्धा या कर्म था।

हाँ ! मैं तुमको शुभ भावना देता हूँ—ख्याल में ताकत है। हो सकता है कि उसका विश्वास उसको लाभ पहुंचा दे। मैं तो यह समझता हूँ।

मेरा विश्वास था कि दाता दयाल उस परम सत्व के अवतार थे मुझे जो उन्होंने हुक्म दिया मैंने उस हुक्म को मालिक का आशीर्वाद मानकर विना निजी मान, इज्जत, दौलत या यश का ख्याल करके उनका काम किया।

खुश रहो प्रभू ! ये दुनिया का रूप कालान्तरों से चला आ रहा है। अनेक मत आये, पीर पैगम्बर भी आये, ऋषि भी आये, महा-पुरुष भी आये—क्या कर गये ? समय की आवश्यकतानुसार संसार को शान्ति का रास्ता बता गये, सहारा दे गये। फिर पता नहीं कहाँ गये, क्या खबर, हम भी कहाँ जायेंगे क्या खबर। संस्कार मिला हुआ है जैसा ख्याल वैसा हाल।

सुखी रहो, सुख से जीवन गुजारो, अपनी नीयत को साफ रख करके काम करते जाओ। और जो कुछ भी है उसके सुपुर्द करदो।

मनुष्य बनो के प्रेमी ग्राहकों से

मनुष्य बनो का वर्ष आखिरी पर चल रहा है। लेकिन ५० प्रतिशत ग्राहक भाइयों ने अभी तक अपना चन्दा नहीं भेजा है। अतः हमारा निवेदन है कि या तो ग्राहक भाई अपना चन्दा शीघ्र हीं भेज दें वरना मजबूर होकर हमें उन्हें पत्रिका भेजना बन्द करना पड़ेगा।

व्यवस्थापक

निवेदन

ग्राहक भाइयों से निवेदन है कि वे अपना चन्दा भेजते समय कूपन पर अपना साफ साफ पता एवं ग्राहक संख्या अवश्य लिखें।

व्यवस्थापक

धन्यवाद

श्री उत्तम कुमार ज्योति कुमारी सर्राफ भीलवाड़ा से २१) रु० मनुष्य बनो की सहायतार्थ प्राप्त हुये। ईश्वर से प्रार्थना है कि उनका कल्यान हो और उनकी इसी प्रकार की प्रबृत्ति बनाये रक्खे।

व्यवथापक

प्रवचन

परम दयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर)

जीवन क्या है ? अब बुढ़ापा आगया, मैं यह काम करता हूं। किसी किसी समय बेख्याली में चला जाता हूँ फिर जब होश आता है तो अपने आप से पूछता हूं कि तुम यह क्या करते हो ? करना क्या है हर एक जीव यहां किसी खास मिशन के लिये आता है। कुदरत का खेल है कोई किसी काम के लिये आता है और कोई किसी काम के लिये यहाँ आता है। मैं छोटी आयु से राम को मिलने का इच्छुक था। मौज हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरणों में लेगई। उन्होंने मुझे संतमत की तालीम दी। इनकी वानियों में तमाम मजहबों का खण्डन था। राम जौर कृष्ण को काल के अवतार बताया, मुसलमान भी नहीं पहुंचे। बुद्ध और जैन भी नहीं पहूंचे। हिन्दु बेदान्ती और सूफी भा काल मैं रह गये। इन बानियों को पढ़कर दिल को चोट लगी कि मैं कहाँ फँस गया जहां मेरे पूर्वजों का खन्डन किया गया है। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस रास्ता पर सच्चा होकर चलूँगा और जो मेरा अनुभव होगा वो संसार को बता जाऊँगा। इसलिये यह जो कुछ मैं करता हूँ यह मेरा अपना कर्म भोग है किसी पर कोई उपकार नहीं बलकि मैं आपका उपकार मानता हूं कि लोग आजाते हैं और मुझे अपना अनुभव कहने का अवसर मिल जाता है।

क्या सन्तों का मार्ग ठीक है ? सन्तों की आखिरी मंजिल क्या है ? जहां राम है न रहीम है न गुरु है न चेला है धर्म है और न

कर्म है। न वहाँ खालिक है और न वहाँ मखलूक है। वहाँ केवल अपना आप या अपनी जात बाकी रह जाती हैं। अब मैं महसूस करता हूं कि स्वामीजी महाराज ने जो कुछ कहा है वो बिलकुल ठीक कहा है क्यों? अभी मैं समाधि में एक ऐसी अवस्था में था जहां न खुदा की याद थी और न हुजूर दातादयाल जी महाराज का रूप था। मेरे अन्तर केवल एक चैतनता थी। इसलिये मेरे अनुभव ने सिद्ध किया कि सन्तों का लक्ष्य स्थान बिलकुल ठींक है मगर दुनियांदारों को इसकी जरूरत नहीं आप लोग तो मन के चक्कर में हैं और सांसारिक वासनाओं को पूरा करने के लिये सन्तों के पास जाते हैं। मैं भी मन के चक्कर में था लेकिन हुजूर दाता दयालजी महाराज की दया से और आप लोगों की दया से और आपके तजुरवात की बदौलत मैं इस चक्कर से निकल गया। अब मैं जब यह सच्चाई बयान करता हूँ तो भूपसिंह कहता है कि यह सचाई आप क्यों बयान करते हैं लेकिन अगर मैं यह सचाई ब्यान नहीं करता और परदा रखता हूँ और लोगों से धन मान और इज्जत लेता हूँ तो यह धन और मान इज्जत मुझे खा जायेंगे और मेरी जिन्दगी बरबाद हो जायेगी क्योंकि मैंने आप लोगों को धोखा दिया है। लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रगट होता हे और मैं नहीं होता है। इस एक बात को परदे में रख कर गुरुओं और महात्माओं ने दुनिया को बेवकूफ बनाया है और दुनिया लुटी जारही है। कल एक आदमीं की चिट्ठी आई वो लिखता है कि अभ्यास में मैंने अपने अन्तर बहुत चांद देखे एक चांद पर आप बैठे थे दूसरे पर भूपसिंह था और तीसरे पर भन्डारोदेवी थी। फिर वो लिखता है कि एक रात स्वप्न में किसी मुसीबत में था तो भूपसिंह सिर पर जटायें, लंगोट बांधे एक हाथ में चिमटा और दूसरे में कमण्डल लिये हुए प्रगट हुआ फिर आप प्रगट हुए और आपने मुझे मुसीबत से बचा दिया। दूसरी जगहों पर ऐसी घटनाओं को लेकर अपना प्रोपेगन्डा

किया जाता है कि सुनो भाई ! यह क्या कहता है। ऐसी बातों से दुनियां को लूटा जारहा है। ऐसे हालात की वजह से कुदरत ने मेरे दिमाग को हिलाया। इसलिये मैं सचाई बयान कर जाना चाहता हूँ। सचाई क्या है ? कि यह जितने भी अन्तर में ख्यालात विचार भाव ओर रूप रंग प्रगट होते हैं यह सब माया है और मन का खेल है। इनमें रूहानियत नहीं है। यह भाई जगन्नाथ सदा अपने स्वप्न और साधन के हालात मुझे लिखता रहता है अगर मैं सचाई व्यान नहीं करता तो पब्लिक मेरे पीछे पड़ जायगी और मुझे गुरू मानेगी लेकिन मैं तो कहीं जाता नहीं अब अगर मैं सचाई बयान नहीं करता तो मैं मुजरिम हूँ। मैंने सन्तों के हालात देखे उन्होंने आखरी आयु में काफी कष्ट उठाये मुझे यह बहम आगया कि चूंकि उन्होंने सचाई वयान नहीं की इसलिये उनको दुख उठाना पड़ा। इसलिये मैं सचाई बयान करता हूँ। मेरा क्या अजाम होगा यह मुझे पता नहीं।

दुनिया में दो मार्ग हैं। एक निवृतीं मार्ग और दूसरा प्रवृति मार्ग—प्रवृति मार्ग में मन तुम्हारा साथी है और तुम्हारे मन के विश्वास और श्रद्धा की वजह से तुमको सब कुछ मिलेगा। सन्तों ने मन के चक्कर से निकालने के लिये जीवों को नाम दान देने का सिलसिला जारी किया। जिसको नाम मिल जाता है वह संसार के चक्कर में नहीं आता। संसार क्या है ? सम और सार, सार हैं हम, जो कुछ हमारे सामने आता है वो है संसार। खुली आंख से या वन्द आँख से हम जो कुछ देखते हैं वो है संसार। सन्तों ने दुनियां को संसार से पार करने के लिये नाम दान जारी किया था लेकिन मैं यह कहूँगा कि आज कल जो नाम दिया जाता है इससे तो जीव दुनियाँ में फँसते हैं। दुनिया से पार करने के लिये कौन नाम देता है ? पिछले जमाने में तीस तीस वर्ष के बाद किसी का अधिकार और संस्कार देख कर उसको नाम दिया जाता था। लेकिन आज कल क्या होता है सुबह को जाओ पैसे खर्च करो और नाम लेकर

शाम को घर वापस आजाओ और नामधारी बन जाओ। क्या आम लोग नाम के अधिकारी हैं ? नाम का अधिकारी कौन है ?

विशयों से जो हुए उदासा, परमार्थ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके जगत पदारथ चाह न ताके।
तन इन्द्री आसकत ना होई, नींद भूक आलस्य जिन खाई।
विरहबान जिन हृदय लागा, खोजत फिरे साध गुरु जागा॥

यह नाम जो हम को दिया जाता है इससे तो दुनिया से कोई भी निकल नहीं सकता मैं स्वयं हैरान हूं कि गुरु लोग धड़ाधड़ नाम दे रहे हैं क्या कोई इन शरतों को पूरा करता है जो ऊपर ब्यान की गई हैं ? किसी एस्टेट बनाने के लिये नाम दिया, किसी ने डेरा बनाने के लिये नाम दिया और किसी ने धाम बनाने के लिये नाम नाम दिया। नाम का जो असली मकसद है उसको तो कोई समझता नहीं है।

नाम अमोल रतन है जग में
नाम मिला तो सद मिला नाम है सब का सार।
जो कोई सुमिरे नाम नित, ब्यापे नहीं संसार॥

यह जितने भी नामधारी हैं खाह वो किसी भी मत के हैं वो अपनी आत्मा से पूछें कि जो नाम यह जपते हैं क्या इससे इनको संसार नहीं ब्यापता ? क्या वो दुखी और सुखी नहीं होते ? अगर होते हैं तो उनको नाम नहीं मिला—अगर तुम राधास्वामी को नाम समझते हो तो मैंने बहुत जपा। सूरज चाँद सितारे देखे—सुमिरन भी किया वीनें सुनीं और शब्द सुने। क्या फिर मैं संसार में नही फँसा ? क्या मुझे गुस्सा नहीं आया ? क्या मैं कामी नहीं हुआ ? जो नाजायज तरीकेसे नहीं लेकिन क्या मुझे पैसे की ख्वाइश नहीं थी ? चन्दएक महात्माओं के गुरु गद्दी पर आने के बाद बच्चे पैदा हुए। किसी गुरू को जब गुस्सा आता था तो वो लोगों को सोठी से मारते थे। महात्मा लोग खद तो काम क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार

से बच न सके और दूसरों को उपदेश करते हैं कि इन पापों से बचो असलियत यह है कि इनको कोई मार नहीं सकता अगर इनको कोई मार देगा तो उसकी जिन्दगी मुशकिल हो जावेगी। इनको अपने कंट्रोल में रखने की जरूरत है।

वो जो असली नाम हैं आप लोग उसको सुनने के लिये तैयार नहीं हैं और ना ही हर एक आदमी उसका अधिकारी है और नहीं हर एक आदमी उस नाम को हाँसिल कर सकता है। मेरा चूंकि यह करम भोग है इसलिये बता रहा हूं सुनो! तुम सुमिरन करते हो—गुरु स्वरूप को अपने अन्तर में देखते हो—प्रकाश को देखते हो और शब्द को सुनते हो और अपने अन्तर में भिन्न भिन्न प्रकार के नजारे देखते हो! यह जो कुछ तुम अन्तर में देखते हो क्या वो तुम्हारा संसार नहीं हैं? कहीं अच्छा संसार है और कहीं बुरा संसार है। तो फिर बो नाम कौनसा है जिससे संसार नहीं व्यापता? जहाँ हम ना प्रकाश को देखते हैं और ना शब्द को सुनते हैं और न किसी और चीज के पीछे दौड़ते हैं और अपने आप में ठहर जाते हैं वह है हमारा अपना रूप और वही नाम है और उसी का नाम राधा-स्वामी है।

राधास्वामी निज स्वरूप, गोता मार तन के कूप।
होजा सुख राशी।

हुजूर दाता दयाल जी महराज ने मुझे नाम दिया मगर नामकी प्राप्ती मुझे आप लोगों की दया और तर्जुबात की वजह से हुई। मैं हुजूर दाता दयालजी महाराज को तंग किया करता था कि आप मुझे वह नाम बतायें जिससे संसार नहीं व्यापता। उन्होंने सन १९१८ में फरमाया था कि तुम को सच्चे सतगुरु राधास्वामी दयाल के दर्शन सतसंगियों के रूप में होंगे और अब होगये। जब लोग कहते हैं कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रगट होता है उनके काम कर जाता है और मुझे पता तक नहीं होता और न हीं मैं कहीं जाता हुँ त

मुझे समझ आगई कि यह सब मन का खेल है। तो फिर मैं आगे जाने के लिये मजबूर होगया। तो फिर नाम क्या है ? अपने आप में ठहर जाने की जो अवस्था है वह है नाम की प्राप्ती। उस अवस्था में जाने के बाद फिर संसार नहीं व्यापता। अपने आप में ठहर जाने से यह ज्ञान हो जाता है कि मैं कौन हूँ। दुनिया तो उसके सामने आयेगी मगर वह उसमें फँसेगा नहीं इस अवस्था का नाम "जीवन मुक्त" अबस्था है और यही विदेह गति है। जिस तरीके से चाहो इसे प्राप्त करलो। मुझे इसकी प्राप्ती आप लोगों से हुई। अब तुम लोग कहते हो कि महाराज ! ऐसा कहने का दस्तूर नहीं मगर जिन्होंने परदा रखा और सचाई ब्यान नही की मैंने उनके हालात देखे और उनके अंजाम देखे और मैं डर गया इसलिये मैं सच्चाई बयान करता हूँ। जिसकी मर्जी हो आये जिसकी मर्जी हो न न आये। जिसका जी चाहे मेरा सतसंग सुने और जिसका जी चाहे ना सुने, जिसका जी चाहे मेरी कोई पुस्तक पढ़े और ना चाहे तो ना पढ़े। अगर कोई यह समझता है कि मेरी इस तालीम से लोगों का भला हो सकता है तो वो मर्जी हो मानवता मन्दिर की सहायता करें।

वह सार अवस्था कौनसी है जिससे संसार नहीं ब्यापता ? वह है तुम्हारी सुरत, तुम सार हो अगर अपने रूप का ज्ञान हो जाय तो जब तक जिन्दगी है, संसार तो रहेगा बाहर में भी और अन्तर में भी और वह संसार को देखेगा भी जरूर मगर उस में फँसेगा नहीं बल्कि बो तमाशाही बन कर उसका तमाशा देखेगा। मैंने कल की चिट्ठी आपको बताई अगर मैं साफ बयानी नहीं करता तो लोग तो यह कहेंगे कि भूपसिंह और भण्डारो बहुत बड़े महात्मा हैं और इनकी सेवा करेंगे अगर यह उस सेवा को स्वीकार करेंगे तो जायेंगे कहाँ ? दुनियां में इसलिये अशान्ति है कि लोग हेरा फेरी करते हैं और सचाई से काम नहीं करते, केवल सन्तों से सचाई की आशा

थी लेकिन इन्होंने भी बात को परदे में रखा और सचाई बयान नहीं की। जब कोई गुरु किसी जीव को उसके अन्त समय पर लेने नहीं जाता और प्रोपेगन्डा यह किया जाता है कि नाम ले जाओ अन्त समय तुमको गुरु ले जायगा तो यह सचाई कहाँ है ? यह तो सरासर धोका है तो फिर शान्ति कैसे आय ? क्यों ?

करम प्रधान विश्व कर राखा।
जो जस कीन सो तस फल चाखा ॥

सन्त बनना बहुत कठिन है मुझ से नहीं बना गया। सन्त सदा अपने रूप में रहता है मैं गिरता रहता हूँ। जब यह जमीन घूमती हुई कभी सतलोक के (Parallel) गन्दे मुकाबल आती है तो उस समय कोई सन्त संसार में पैदा होता है। आज कल तो जिसको देखो वही अपने आपको सन्त परमसन्त कहाता है। सन्त गति बहुत कठिन है। हुजूर दाता दयालजी महाराज ने एक शब्द में मुझे लिखा था—

जग में जीव रहें बहुतेरे, पर फकीर कोउ एका ॥

सन्त अपने रूप में रहता है वह संसार में नहीं फँसता ऐसे पुरुष का ध्यान करने से और दर्शन करने से तुमको सब कुछ मिलना चाहिये बशर्ते कि तुम उस को अपनी खोपड़ी में रखो। यही बात पतंजली ऋषी ने अपने शास्त्र में लिखी है। तुमसे और कुछ नहीं होता तो किसी बीत राग पुरुष को अपनी खोपड़ी में रखो। बीतराग पुरुष कौन है ? राग का अर्थ है लगाओ या तुअलक (Attachment जो किसी चीज से बँधा हुआ नहीं है वो है बीतराग पुरुष। जो रूप रंग या गुरु स्वरूप या प्रकाश और शब्द या किसी मजहब के साथ बँधा हुआ है वो बीतराग पुरुष नहीं है। अफसोस कि अपना भाव बयान करने के लिये मुझे शब्द नहीं मिलते फिर भी मैं कोशिश कर रहा हूँ कि आपको समझा सकूँ। इस मंजिल तक पहूँचना

है उसको पूर्ण मानो अगर पूर्ण नहीं मनोगे तो मंजिल पर नहीं पहुँच सकते। इसी वास्ते यह रोचक बाणी कही गई है कि सन्त अनामीधाम से आते हैं। यही सनातन धर्म कहता है—

गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णू, गुरु देवो महेश्वरा।
गुरु साक्षात परमब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवेनमः ॥

उन्होंने यह नहीं कहा कि गुरु विषशर है या गुरु आशर है या गुरु वेदव्यास हैं। कबीर साँहब ने कहा है—

गुरु को मानष जानते, सो नर कहिये अन्ध।
दुखी होंय संसार में, आगे यम का फंद ॥

बीतराग पुरुष मिलना बहुत कठिन है इसलिये जिस गुरु ने नाम लिया हुआ है उसको पूर्ण मानो। काम तो तुम्हारा विश्वास करेगा। हुजूर महाराज जी ने स्वामीजी महाराज के रूप में उस अकह, अपार, अगाध और अनाम को माना और ऐसे ही मैंने उस मालिक को हुजूर दाता दयाल जी महाराज के रूप में माना जिसका ऐसा विश्वास होगा वह आगे जायगा, दूसरा नहीं। जब तक कोई अपने रूप में नहीं रहेगा उसको संसार जरूर ब्यापेगा और ब्यापता रहेगा। अपने आप में रहना ही २४ घंटे का सुमिरन है। मिसाल के तौर पर तुम देखो कि मेरा नाम फकीरचन्द है, जब भी कोई यह नाम लेगा या इस नाम से पुकारेगा तो मेरी तवज्जह एक दम उस तरफ जायगी क्योंकि मुझे यह विश्वास है कि मेरा नाम फकीरचन्द है। एक ख्याल में परपक्व हो जाना ही नाम का सुमिरन है। एक औरत जारही है सिर पर पानी की गागर है वह बातें भी करती जारही है और गागर की तरफ भी पूरा ध्यान है कि गिर न जाय। ऐसे ही सुमिरन होना चाहिये जब यह हालत परपक्व हो जाती है तो उसीका नाम ही "नाम" है।

सुख देवे दुख को हरे, काटे कष्ट कलेश।
जीवित शान्ति चित बसे, अन्त में सतगुरु देश ॥

कष्ट और कलेश कैसे कटेंगे ? इनको ज्ञान रूपी और अनुभव रूपी गुरु काटता है। जब से मुझे यह पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रगट होकर उनके काम कर जाता है ओर मैं नहीं होता तो मुझे मन के रूप की समझ आगई। इसलिये अब जो भी विचार आता है वह मुझ पर असर नहीं कर सकता। इससे मेरे दुख और कलेश कट गये क्योंकि ना किसी ख्याल का मुझ पर असर होगा ना मुझे कोई दुख और होगा तो मेरे कष्ट और कलेश तो खुद व खुद ही कट गये। समझते हो जगन्नाथ ! मन में जो प्रश्न आते हैं उनमें फँसो मत। तुम कहते हो कि बाबाजी ! आप आये और मैंने चाय बनाई और आपको पिलाई और हम सबने आपके दर्शन किये आदि आदि। तुम भूल में हो मैं तुम्हारे पास नहीं गया। तुम्हारा मन ही गुरु है और तुम्हारा मन ही चेला है अगर मैं सचाई नहीं बताता तो जाऊँगा कहाँ ? मैं हूं सन्त सतगुरु वक्त। मेरे सतसंग में बैठो और दर्शन करो अगर मेरा ध्यान करने से तुमको फायदा नहीं पहुंचता तो मैं मुजरिम हूं और मैं बीत राग पुरुष नहीं हूँ और अगर तुम ध्यान नहीं कर सकते तो फिर तुम कसूरवार हो अगर तुम विश्वास नहीं कर सकते तो तुम्हारा कसूर है। या तो मेरे पास आओ मत और अगर आते हो तो मेरी सचाई को सुनो और उस पर अमल करो ताकि तुम लूट से बच जाओ। इस समय के गुरु-इज्म में काफी बुराइयां पैदा हो गई हैं और कमजोरियाँ आगई हैं। अगर तुमने गुरु को बहुत राग माना हुआ है। और तुम्हारा पक्का विश्वास है तो तुम्हारी मनोकामनायें पूरी होनी चाहिये। इसलिये जिसको मानते हो उसको पूर्ण मानो। औरत तो एक है लेकिन बच्चे का उसके लिये और भाव है, पति का और है और भाई का और है।

यह आदमी कहता हैं कि मेरे अन्तर गुरु नानक साहिब आते और बातें करते हैं। अरे दिवाने ! कोई बाहर से तुम्हारे अन्तर

नहीं आता। जिस प्रकार के बिचार तुम्हारे दिमाग में हैं और जिस प्रकार के संस्कार तुम्हारे दिमाग पर पड़े हुए हैं वही स्वप्न में या साधन में रूप धारण कर के तुम्हारे सामने आते हैं। दुनिया को समझ नहीं इसी चक्कर से निकालने के लिये सन्तों का जहूर हुआ था लेकिन उन्होंने सैन बैन में कहा जिसको संसार ने समझा नहीं बजाय इस चक्कर से निकलने के दुनिया और फँस गई। जिस उसूल पर सन्तों ने सबका खण्डन किया कि यह सब मन का चक्कर है और राम और कृष्ण की पूजा हमसे छुड़ाई कि यह सब काल मत है। अब इन्होंने स्वयं क्या किया ? गुरु स्वरूप से संसार को बांध दिया और उसी काल चक्कर में जकड़ दिया। कि सारी जिन्दगी आते रहो और भेंट चढ़ावा देते रहो। यह गुरु लोग मन मत की तालीम देते हैं अब अगर मैं इनका खण्डन करता हूँ तो क्या बुरा करता हूँ —

जीवत शान्ति चित्त बसे अन्त में सतगुरु देश।

अब जीते जी तो मुझे शान्ति, मरने के बाद क्या होगा ? पता नहीं अन्त में सतगुरु देश क्या है ? वो अवस्था जहाँ ना गुरु है और न चेला है। स्वामी जी महाराज ने बारह मासा के चेत महीना में लिखा है —

"नहीं सतनाम ना अनाम अनामी"

अर्थात दिमाग का खेल बिल्कुल साफ हो जाता और उसमें कुछ बाकी न रहता दूसरे शब्दों में हमारा सर्व व्यापक हो जाना यह है गुरु का देश। जिन्दगी क्या है ? प्रारम्भ में भी खामोशी और अन्त में भी खामोशी बीच की दशा में चक्कर चलता है। यह समझा है मैंने गुरु का देश—हो सकता है मैं गलती पर हूं मगर मेरी नीयत साफ है। ऐ मालिक ! मुझे बचपन से ही तेरी तलाश थी। मौज मुझे संतमत में ले आई। मैंने जो स्वयं अनुभव किया उसके आधार पर मैंने तालीम को बदला है। अगर मैं गलत हूँ तो मुझे कोई अफसोस नहीं क्योंकि मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं अगर मैं गलत हूँ तो यह महात्मा बड़ी खुशी से मेरा खण्डन करें और अगर मैं ठीक हूं तो यह इस बात की तसदीक करें —

जप तप संयम नीम यम सब हैं नाम अधीन ।
नाम भक्ति के सिंध का प्रेमी भक्त मीन ।।

यह बहुत ऊँची बात है नाम क्या है ? तुम्हारी वो अवस्था जहां तुम सबको छोड़कर अपने निज स्वरूप में ठहर जाते हो या अपने आप में ठहर जाते हो उस अवस्था का नाम 'नाम" है—

राधास्वामी नाम जो गावे सोइ तरे ।
कल कलेश सब नाश सुख पावे सब दुख हरे ।।
ऐसा नाम अपार कोई भेद ना जानई ।
जो जाने सो पार बहुर ना जग में जनमई ।
राधास्वामी गायकर जन्म सफल कर ले ।
यही नाम निज नाम है मन अपने धर ले ।।

यह तुम्हारा अपना नाम है । दुनिया नाम के पीछे लड़ती है, कोई कहता है कि पांच नाम "नाम" है कोई राम नाम को 'नाम' कहता है । कोई कुछ कहता है और कोई कुछ कहता है । मतलब तो मन को इकट्ठा करने से है । कोई राम राम से करे कोई राधास्वामी से करे कोई अल्ला हु से करे या कोई एक दो तीन चार जप कर करे । हजूर दाता दयाल जी महाराज ने लिखा है —

घट में दर्शन पाओगे सन्देह कुछ इसमें नहीं ।
मैं तो घर में हूँ तुम्हारे ढूढ़ लो मुझको वहीं ।।
शब्द सुनते हो मेरा अन्तर में चित्त को साध कर ।
सुरत मेरा रूप है इसको समझ लेना यही ।।

जो तुम हो या जो तुम्हारा **Self** है वो है जात वो ही अनामी है । तुम्हारे दिमाग के अन्तर आद अवस्था शब्द 'नाम' है । तुम मुख्य हो और बाकी सब तुम्हारे पर हैं अगर तुम ना हो तो प्रकाश को कौन देखे और शब्द को कौन सुने और जप तप कौन करे ।

सूक्ष्म हूँ अस्थूल हूँ कारण हूँ कारण से परे ।
देख दृष्टि को जमाकर अपने अन्तर में कहीं ।।

तुम लोगों की दया से मैंने नजर जमाई केवल इस एक विचार से कि मैं किसी के अंतर नहीं जाता मेरी जिन्दगी का तख्ता पलट गया । अब मन से परे प्रकाश और शब्द में जाता हूं और उस चीज को तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है । उसका अंत नहीं मिलता । कभी कभी वो अवस्था आती है जहां सतनाम, ना नाम अनामी है ।

चाह जब दर्शन की होगी देख लोगे आप तुम ।
जागते में सोते में संध्या में मैं हूँ सब कहीं ॥

कैसे ? तुम्हारा अपना (**Self**) जागरित में, स्वप्न में समाधी में या जब तक तुम जिन्दा हो वो मौजूद है । तुम अपनी जात को छोड़कर दूसरों के पीछे फिरते हो —

राधास्वामी धाम में सेवक हूँ राधास्वामी का ।
मेल मेला राम में इसकी परख आई नहीं ॥

मेलाराम ऐक सतसंगी था । हजूर दयाल जी महाराज ने उसके नाम यह शब्द लिखा था । मैं न गुरू हूँ और न महात्मा हूँ मैं जब संतमत में आया मैं स्वयं नहीं आया मौज मुझे ले आई । इनकी बानियाँ पढ़ी तो इनमें सबका खण्डन पाया । मैं सोचता था कि कबीर साहिब या स्वामी जी महाराज के पास क्या हक था कि उन्होंने सबका खण्डन किया । इस बात को समझने के लिये हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह काम दिया था । कबीर साहिब ने अपनी बानी में लिखा है—

राम को पिता जो दशरथ कहिये दशरथ कोउ न जाय ।
दशरथ पिता राम को दादा कहो कहां ते आय ॥
राधा रुकमणी कृष्ण की रानी कृष्ण द्वौ को मेरा ।
सोला सहस गोपी उन भोगी वो भयो काम को कीरा ॥

अब आप स्वयं सोचो कि जिस आदमी का राम, कृष्ण पर विश्वास है जब वो यह बानी पढ़ेगा तो उसके दिल पर क्या असर होगा । यही मेरा हाल था चूँकि हजूर दाता दयाल जी महाराज पर मेरा पूर्ण विश्वास था इसलिये मैं उनको तो न छोड सका और उस समय मैंने

प्रण किया था कि इस रास्ता पर सच्चा होकर चलूँगा और जो कुछ मुझे हासिल होगा वो संसार को बतला जाऊँगा। जिस नियम पर कबीर साहिब ने और स्वामी जी महाराज ने सब का खन्डन किया है उसकी समझ मुझे आप लोगों से आई । अब अगर मैं सच्चाई ब्यान नहीं करता और परदा रखता हूँ तो करम से बच कर जाऊँगा कहां ? अगर कर्म का नियम ठीक है तो जिन महात्माओं ने परदा रखा और सच्चाई ब्यान नहीं की और लोगों को अज्ञान में रखकर उन से धन मान और इज्जत ली क्या वो इस करम से बचेंगे ? नहीं करम का फल सबको भोगना पड़ता है। कोई कहता है कि हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज मेरे आप कोई कहता है कि हजूर दातादयाल जी महाराज या संत किरपाल सिंह जी हमारे अन्तर आये—अगर यह सच है तो फिर वो सतलोक नहीं गये यह अज्ञान है और सच्चाई नहीं है।

जप तप संयम नेम यम सब हैं नाम अधीन ।
नाम भक्ति के सिंध का प्रेमी भक्त है मीन ।।

हम सब परम तत्व की आधार की अंश हैं और सत की एक किरण हैं जो वहाँ पहुंच जाता है। उसके भ्रम और वहम सब दूर हो जाते हैं और सुख से अपना जीवन ऐसे गुजारता है जैसे मछली बेफिकर होकर पानी में तैरती है।

हर्ष शोक व्यापे नहीं संत ताही को जान।

वो राज को समझकर संसार में फँसता नहीं यह मेरी समझ में आया है —

चञ्चल मन निश्चल बने उपजे हर्ष हुलास ।
मन में भजे जो नाम को कभी ना हुए उदास ।।

इन्सान का मन बहुत चञ्चल है। यह स्मरण ध्यान आदि जितने भी साधन हैं यह मन को इकट्ठा करने के लिये हैं कोई राम राम से कर ले कोई अल्लाह से करे कोई अजपा जाप से करे भाव तो मन को ठहराने से

है एक तरीका तो अपना नहीं सकते। जिस तरीका से तुम मन को ठहरा सकते हो ठहराओ। मैं नहीं कहता कि तुम राधास्वामी बन जाओ। तुम को कुञ्जी बता दी अमल करना तुम्हारा काम है। इस राज को सबने छुपाया। हरएक मजहब, हर एक ग्रन्थ, हर एक गुरु और हर एक महात्मा अपने तरीकों को अच्छा समझता है और दूसरों का तरीका अच्छा नहीं समझता। मैंने असलियत को खोल दिया। कबीरदास ने धर्मदास को राज बताकर फरमाया —

धर्मदास तोहि लाख दुहाई।
सार भेद बाहर नहीं जाई॥

स्वामी जी महाराज भी अपनी बानी में लिख गये —

संत बिना कोई भेद न जाने वो तो है कहीं अलग में।

मैंने असलियत को जाहर किया और मुफ्त में दूसरों से दुशमनी मोल ली क्यों? केवल इसलिये कि मेरे जिम्मे ड्यूटी है। हजूर दातादयाल जी महाराज ने मेरे नाम लिखा था कि —

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्यान जगत में आया परमदयाल सनेही॥

हजूर दातादयाल जी महाराज ने मेरा नाम परमदयाल रखा। अब मैं सोचता हूँ कि मैं किसी को फूँक तो मार नहीं सकता इसलिये जगत के कल्यान के ख्याल से मैंने इस राज को खोल दिया है कि ऐ इन्सान! जिस तरीके से तेरी मरजी हो तू अपने मन को इकट्ठा कर और संसार में सुख से अपना जीवन व्यतीत कर। क्यों लड़ते हो आपस में? कोई सिख बन गया, कोई हिन्दू बन गया, कोई मुसलमान बन गया और कोई ईसाई बन गया। मालिक तो सबका एक है क्यों मजहब के नाम पर एक दूसरे से घृणा करते हो और एक दूसरे से लड़ते हो। यही एक तरीका मेरी समझ में आया है जिससे कि दुनिया में इतहाद पैदा हो सकता है। और दूसरी बात यह है कि मैं अपनी जान बचाना चाहता हूँ। मैंने संतों के ख्याल

देखे तो मैं डर गया। मुझे यह वहम आ गया कि संत दूसरों को तो नाम देते हैं ताकि वो दुखों से बच जाय लेकिन नाम ने उनको क्यों दुखों से नहीं बचाया? लोग कहते हैं कि संतों को तकलीफ नहीं होती लेकिन मेरा तजुरबा इसके खिलाफ है। मैं धाम गया और वहाँ हजूर दातादयाल जी महाराज के पांव पर सिर रखा तो उन्होंने तकलीफ महसूस की और हाय कहा। मैंने अर्ज की महाराज! क्या हुआ उन्होंने फरमाया कि फकीर! यहां मकान बन रहा है और मैं ईटें उठा के ला रहा था तो एक ईट पांव पर गिर गई। जखम हो गया और अब तकलीफ है। बड़े-बड़े संत दुख के समय चिल्लाते थे। इसलिये कष्ट सबको होता है यह और बात है कि किसी ने बता दी और किसी ने न बताई। मौलाना अबुल कलाम आजाद नें लिखा है कि मैं जेल में था घर में मेरी औरत बिमार पड़ गई और मर गई। महात्मा गांधी और दूसरे लीडरों ने मेरे साथ हमदरदी का मजहार किया लेकिन मैं कहता था कि मुझे कोई फिकर नहीं है और न ही मुझे कोई अफसोस है लेकिन अन्दरूनी तौर पर मुझे बहुत दुख था। यह एक ऐसा मामला है कि कोई सच्चाई बताता नहीं अगर मैं यह कहू कि मुझे तकलीफ नहीं होती तो यह बिलकुल गलत है। तकलीफ मुझे भी होती है मगर मैं यह समझता हूँ कि यह मेरा करम है। जीवन में दुख और सुख आते रहते हैं। इस ज्ञान से मैं शान्ति लेता हूँ। इसलिये मैंने राज को खोला। आप दुनियादार हैं आपको कहना चाहता हूं कि नाम आम दुनिया के लिये नहीं है। यह तो खास खास आदमियों के लिये है। गुरु नानक साहिब ने कहा है—

नानक कोटन में कोऊ नारायण जिन चित्त।

इसलिये आप नाम के पीछे मत पड़ो उस तरीका को अपनाओ जिससे तुम्हारी दुनियावीं जिन्दगी सुख से गुजरे। इसके लिये है वेद मार्ग अर्थात 'शिव संकल्प अस्तु'। तुम्हारी दुनियावी जिन्दगी को

बनाने वाला तुम्हारा मन है। चौदह लोक में काल बसता है। इसलिये अपने मन को मीत बनाओ। अपने विचारों को शुद्ध रखो देखो! तुमको स्वप्न में गुस्सा आ जाता है तो किसी को मुक्का मारते हो और तुम्हारा हाथ हिलता है। लात मारते हो तो टांग हिलती है किसी को कुछ कहते हो तो तुम्हारीं जवान हिलती है। स्वपन में ख्याली औरत बना लेते हो उससे काम भोगते हो तो तुम्हारा वीर्य गिर जाता है। कहने का अर्थ यह है कि जो कुछ तुम स्वप्न में करते हो वो जान बूझ कर तो करते नहीं लेकिन उसका असर फिर भी शरीर पर पड़ता है। तो जो कुछ तुम जागरित में करोगे या सोचोगे उसका असर तुम्हारे शरीर पर क्यों नहीं पड़ेगा इसलिये अपने मन को साफ रखो और अपने विचारों को शुद्ध रखो। इन्सान के ख्याल में बहुत ताकत है। हर एक आदमी परमार्थ का हकदार नहीं है। लाखो में कोई एक ज्ञानी होता है और उनमें से कोई एक ही आगे पहुंचता है। आप गृहस्थ वालों को क्या करना चाहिये? अपनी नीयत साफ रखो विषय बिकार कम करो जब तक कमा सको अपनी रोटी आप कमाओ घर में शान्ति रखो। जिस आदमी के अंतर जितने ज्यादा रूप रग आते हैं उसकी जिन्दगी उतनी ही ज्यादा विषय विकार में गुजरी है। मैं अगर किसी नौ-जवान को समाधी लगाते देखता हूं तो समझ लेता हूँ कि इसका ब्रह्मचर्य कमजोर है। सुनो! गिदड़वहा स्टेशन पर मैं स्टेशन मास्टर था वहाँ मेरे पास हजूर दातादयाल जी महाराज आये। उनकी आने की खबर सुनकर मेरा एक मित्र भी वहाँ आ गया। वो हजूर दातादयाल जी के पीछे ऐसे फिरता था जैसे गाय के पीछे बछड़ा फिरता है मैंने उससे अलहदगी में कहा कि तेरा इलाज हजूर के पास नहीं है। उसको गुस्सा लगा और कहने लगा कि आप करदो। मैंने कहा कि इनके बाद करूँगा। हजूर दातादयाल जी महाराज के चोला छोड़ जाने के बाद वो मेरे पास आया और कहने लगा कि

अब मेरा इलाज कीजिये। मैंने कहा कि तुम महा कामी हो इसलिये अशान्त हो उसको गुस्सा लगा कहने लगा कि पंडित जी! मैं जीवन भर कभी दूसरी औरत के पास नहीं गया मैंने कहा—

"छुरी पराई अपनी मारे दरद जो हो"

सच्ची बात बतलाओ कहने लगा कि बचपन में मेरा विवाह हो गया और मैंने बहुत विशय भोगा—चूंकि मैं वैद्य हूं इसलिये विशय भोग के लिये दवाइयाँ भी इस्तेमाल करता रहा। मैंने कहा कि मेरा इलम गलत नहीं है। तेरा विशय विकार का जीवन ही तुम्हारी अशान्ति का कारण है। इसलिये अब जब तक तुम इस पर कंट्रोल नहीं करोगे तुमको शान्ति नहीं मिलेगी। इसलिये आप लोगों से कहता हूँ कि अगर शान्ति चाहते हो तो विशय विकार कम कमाओ यह मेरा तजुरबा है मेरा ही नहीं दूसरों ने भी कहा है—

जहां काम तहाँ नाम नहीं जहां नाम नहीं काम।
रवि रजनी दोऊ न मिलें एक ठौर इक याम॥

मेरी छोटी उमर की शादी मेरी अशान्ति का कारण बनी थी। इसलिये कहता कि पहले स्वयं बाउसूल बनो और फिर अपनी सन्तान को समझाओ वरना तुम्हारे कहने का उन पर कोई असर नहीं होगा। मैंने अपने मित्र से कहा कि शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य को ठीक रखो तब शान्ति मिलेगी वरना जहाँ मर्जी हो चले जाओ तुमको शान्ति नहीं मिलेगी। इसलिये मैं आप से कहूँगा कि अपने बच्चों के चाल चलन बनाओ वरना या तो उनको साधू लूटेंगे और या डाक्टर लूटेंगे। अपनी अपनी जिन्दगियों को देखो। यह आदमी जो कहता है कि उसके अन्तर गुरु नानक साहिब आते हैं और बातें करते हैं। मैंने उनसे पूछा कि तुम्हारे काम अंग का क्या हाल हैं तो उसने कहा कि मैंने काम बहुत भोगा है। आपको पता नहीं कि रूप रंग क्यों आते हैं। स्वामी जी महाराज ने बारह

सावन आया मास दूसरा सास मरी घर आया सुसरा ।

क्या मतलब है ? कि जब शरीर कमजोर हो जाता है तो मन पर जो संस्कार पड़े हुए होते हैं वो उभरते हैं और शक्लों की सूरत में सामने आते हैं । हजूर दातादयाल जी महाराज ने फरमाया था कि चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना इसलिये मैं अपनी ड्यूटी पूरी कर रहा हूं । आप लोगों से कहना चाहता हूं कि ऐ इन्सान ! सबसे पहले तुमको सुख से जीवन व्यतीत करने की जरूरत है और बाद में सतलोक की जरूरत है । सुख और शान्ति से जीवन व्यतीत करने के लिये क्या करना चाहिये । अपनी वासना ठीक रखो घरों में शान्ति रखो किसी दुखिये की सहायता करो अपनी जातीय गर्ज के लिये किसी से हेरा फेरी मत करो और हक हलाल की कमाई करो । एक आदमी गुरु से तो कहता है कि मेरा आवा-गमन खतम हो जावे लेकिन वो चाहता है कि उसके बच्चे हों पोते पोतिया और दोहते दोहतिया हों । सोचने की बात है कि स्वयं तो यह समझता है कि संसार दुखों की खान है लेकिन स्वयं बच्चे पैदा करके उनको इस संसार में फँसाता है तो वो तो मक्कार है ओर धोखेबाज है और उसका आवागमन से बचने का जजवा केवल एक ढौंग हैं । इसलिये संसारक जीवों के लिये नाम यह है कि अपनी नीयत और अपने संकल्प को ठीक रखो । ख्याल में बहुत शक्ति है । जैसा ख्याल वैसा हाल जैसी मति वैसी गति और जैसी करनी वैसी भरनी । विशय विकार कम करो वरना तुम्हारी भी वही हालत होगी जैसी बसरा बगदाद में मेरी थी । वहाँ मैं हजूर दातादयाल जी महाराज के प्रेम में रोया करता था । यह पंडित परषोत्तम दास और सेठ दुर्गादास मुझे बहुत बड़ा प्रेमी भक्त समझते थे । पंडित परषोत्तम दास जी ने हजूर दातादयाल जी महाराज को खत लिखा कि जैसा प्रेम पंडित फकीरचन्द जी को दिया है ऐसा प्रेम हमको भी अदा कीजिये उत्तर मिला कि जिसकी किसमत में

रोना है वो रोये तुम क्यों फकीर की नकल करते हो। उस समय मुझे पता नहीं था लेकिन अब समझ आई है कि मेरे रोने का क्या कारण था। इसका कारण मेरी छोटी आयु में विवाह और विशय विकार का जीवन था। जिन औरतों को छोटी आयु में बच्चे हो जाते हैं या लोकोरिया हो जाता है उनके लिये शान्ति कहाँ ? इसलिये आप लोगों के लिये नाम यह हैं कि एक रूप बनाओ और इसको पूर्ण मानो और उसका सहारा पकड़ो। अपनी जाती गर्ज के लिये किसी से धोखा फरेब मत करो फिर अगर तुमको तुमको तकलीफ हो जाय तो मैं जिम्मेदार। मैंने आज तक किसी से भी कोई धोखा फरेब नहीं किया है और मुझे आज तक कभी कोई तकलीफ नहीं हुई। मेरे सारे काम होते रहते हैं इसलिये मैं दूसरों को भी यही राय देता हूं।

जगननाथ ! तुम्हारे अन्तर बाबा फकीर नहीं आता जो आता है वो तेरा अपना ही मन है। मेरे पास जो कुछ है वो तो कोई लेता नहीं। मेरे पास सत ज्ञान है और सच्चाई है। इतिहास नहीं बताता कि किसीं महात्मा ने इतनी सच्चाई से काम किया हो जितना मैंने किया है। मैं संसार में पहला आदमी हूँ जिसने इस राज को खोला है और इसीलिये मैं कहता हूँ कि मैं अनामी धाम से आया हूँ क्यों ? कबीर साहिब से पहिले जितने संत आये उन्होंने सतलोक का जिकर किया फिर कबीर साहिब और स्वामी जी महाराज ने अलख अगम और अनाम का जिकर किया। जिस अवस्था से कोई आता है वो वहाँ का ही जिकर करता है। मैं उस अवस्था से आया हूं जहां ना नाम है और ना अनामी है वो मेरी आद अवस्था है चूंकि मेरा अंजाम वो है जहाँ ना सतनाम ना नाम और अनामी है इसलिये मैं कहता हूं कि मैं वहां से आया हूं। हजूर दातादयाल जी महाराज ने मुझे लिखा था —

तू तो आया नर देही में धर फकीर का भेसा ।
दुखी जीव को अंग लगाकर ले जा गुरु के देसा ॥
तीन ताप से जीव दुखी हैं निबल अबल अज्ञानी ।
तेरा काम दया का भाई नाम दान दे दानी ॥

मैं जो बचन कहता हूँ यही मेरा नाम दान है और इसकी तसदीक भानसिंह जो कि घुमान जिला गुरुदारपुर का रहने वाला था ने की थी । उसने बताया था कि मैं छोटी उमर का था जबकि बाबा जैमल सिंह जी गांव में आया करते थे और उन्होंने एक दफा फरमाया था कि जब पंजाब पर आग बरसेगी तो उस समय जो संत आयेंगे वो संसार को नाम दान नहीं देंगे और अपन बचनों से ही जीवों का उद्धार करेंगे चूँकि आप नाम दान नहीं देते इसलिये मैं आपको सन्त मानता हूँ ।

मैं किसी को धोखा नहीं देता आप लोगों को संसार में जीने का सच्चा रास्ता बताता हूं । संसार में दुख सुख आते हैं और कष्ट भी आते हैं । अरे दिवानो ! क्या संत बीमार नहीं होते ? क्या संतों के बच्चे नहीं मरे ? यह तो करम का फल है और इससे कोई भी बच नहीं सकता संत ना बचे तो हम लोग कैसे बच सकते हैं —

नाम तेरे घट में बसे बिन जीभा ले नाम ।
राधास्वामी की दया पूर्ण हों सब काम ॥

काम पूर्ण हों क्यों ना ? जो अपनी सुरत को वहा रखेगा वो तो अपनी जात से मिला हुआ है उसके काम तो खुदबखुद होंगे मेरे सब काम होते हैं इसलिये एक जगह विश्वास रखो । ज्यादा परिश्रम करने की जरूरत नहीं । सुबह शाम सच्चे होकर अपने आप को अपने इष्ट के हवाले करो उसके शरणागत हो जाओ जहाँ तुमको यह आदत पड़ी वो रहीम है । उसको सच्चाई प्यारी है पाखण्ड प्यारा नहीं वो खुदबखुद तुम्हारी सँभाल करेगा संसार के कामकाज करो सन्तान कम पैदा करो । आज कल Family planning पर

जोर दिया जा रहा है। यह कोई नई चीज नहीं यह तो पहले भी थीं। पच्चीस वर्ष की आयु में शादी होती थी। दो तीन बच्चे हो जाने के बाद बानप्रस्त में चले जाते थे और फिर सन्यास ले लेते थे आर फिर सन्त तो पहले ही कहते हैं कि काल निर्दयी है। लेकिन आजकल लोग बूढ़े भी हो जाते हैं फिर भी काम अंग को नहीं छोड़ते। अपनी आय से ज्यादा व्यय मत करो जो मनुष्य अपनी आय से अधिक खर्च करता है वो दुखी होता है। लोक लाज में मत आओ —

'लोक लाज काज बिगाड़ा री'

मैं अपने आप से पूछता हूँ कि लोग तुमको मत्था टेकते हैं क्या तू किसी का कुछ कर सकता है ? सिवाय भावना के मेरे पास और कुछ नहीं है। जो दुखी लोग मेरे पास आते हैं मैं सदा यह चाहता हूं कि इनको सेहत, दौलत और इनके मन को शान्ति मिले। गृहस्थ में सबसे पहले इन चीजों की जरूरत है। मरने के बाद क्या होगा ? किसी को कुछ पता नहीं सब थियोरियां हैं। मैं चाहता हूँ मरने के बाद अगर निकलकर कहीं जाऊँ तो बता सकूँ कि मैं कहाँ गया अभी तक जो कुछ कह रहा हूं यह शरीर में रहते हुए कह रहा हूं।

ऐ दाता ! आपने काम दिया था और फरमाया था कि चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना। मैंने जो अनुभव कियां वो कहा। मेरी नीयत बिल्कुल साफ है और अगर मैं गलती पर हूँ तो मैं कसूरवार नहीं हूँ क्यों ? मैं हजूर दातादयाल जी महाराज और हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के हुकम की तालीम में जो मैंने अनुभव किया वो कहा। अगर मैं गलती पर हूं तो ऐ दाता ! मेरी तालीम को बरबाद करदे और इस मन्दिर को फूँक दे। मैंने जो समझा वो कहा मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं।

जगन नाथ ! अपने अंतर में तुम जितनी जल्दी बाबे फकीर को छोड़ जाओ उतने ही तुम खुश किशमत हो बाद में गुरु का केवल अहसान रह जाता है —

कामी तरे क्रोधी तरे पापी तरे अनन्त ।
आन उपासिक कृतघन तरे ना नाम रहंत ॥

आन उपासिक वो है जो गैर की पूजा करता है और कृतघन है । अहसान फरामोश, आन उपासिक, कृतघन और नाम को रटने वालों की मुक्ति नहीं होंती । जो आदमी गुरु को होशियारपुर में समझता है वो आन उपासिक है । तुम्हारे माँ बाप ने तुमको पाला पोसा और बढ़ाया अब अगर तुम उनकी सेवा नहीं करते तो तुम कृतघन हो । मैंने राधास्वामी मत में हजूर दातादयाल जी महाराज से तालीम पाई और अब मैं उनकी तालीम को फैलाता हूँ इसलिये मैं कृतघन नहीं हूँ ।

जगन नाथ ! तुम्हारे मन से अभी तक दुनिया नहीं गई और जानी भी नहीं चाहिये । अगर जिन्दगी का कोई उद्देश्य नहीं तो जिन्दगी बे मजा हो जावेगी । इसलिये जिन्दगी का कोई उद्देश्य रखो वरना जिन्दगी नहीं गुजरेगी । मैं शुभ भावना देता हूँ इसके सिवा मेरे पास और कुछ नहीं । जब कोई कष्ट हो तो अकेले बैठकर अपने अन्तर में प्रार्थना करो वो सबब अलासबात है कोई न कोई जरिया बना देगा । लेकिन जो आदमी जान बूझकर फँस जाता है उसकी पुकार कौन सुनेगा ।

सबको राधास्वामी ।

——×——

सती कलावती

लेखक—महर्षि शिव

देवशाल नाम का एक नगर था। वहाँ राजा बिजयसेन राज करता था। उसकी रानी श्रीमती साक्षात सौन्दर्य की देवी थीं। उसके गर्भ से एक कन्या उत्पन्न हुई जो पृथ्वी पर चांद का टुकड़ा थी। जो कोई देखता था मोहित हो जाता था। जब बोलती थी मुँह से फूल झड़ते थे और जब मुस्कराती थी तो ऐसा प्रतीत होता था मानों कँवल की पंखड़ियाँ खिल रहीं हैं सारा शरीर सुडौल, नख से सिख तक सुन्दरता के साँचे में ढली हुई। उसके जन्म लेते ही राजमहल का दुख दर्द दूर होगया। सब उसे सच्चे हृदय से प्यार करने लगे। राजा ने रानी से पूछा, "इसका क्या नाम रखना चाहिये ?" बोली, 'इसका नाम कलावती होगा।" परन्तु राजा को यह नाम नहीं भाया। वह कुछ और ही नाम सोचने विचारने लगा। रानी ने कहा "मैं चाहती हूं कि मेरी पुत्री "कला कौशल" हो और उसके शरीर से देश में कला कौशल का प्रचार और उसकी पुर्ण उन्नति हो। यथा नामः तथा गुणः। जैसा नाम होता है वैसे ही गुण मनुष्य में आप ही आप प्रगट होते हैं। लड़की को मां बाप के घर रहना नहीं है। यह जहां जायेगी, जिस राज की रानी होगी वहां अपना काम करेगी। उस राज्य कीं प्रजा इससे सुखी रहेगी। इसलिये मैंने इसी नाम को अच्छा समझा है। बहुत दिनों से मेरी यह अभिलाषा भी थीं कि मेरी यह सन्तान कला कौशल की उन्नति में सहायक हो। अब मुझको पूरा पूरा विश्वास है कि वह ऐसी ही निकलेगी।" राजा चुप होगया। उसकी रानी बड़ी ही बुद्धिमान थी इसलिये राजा ने अधिक रोक टोक नहीं की। बड़े ही लाड़ प्यार से उसका पालन पोषण होने लगा।

पढ़ाने लिखाने के लिये कई अध्यापिकायें नियत थीं। प्राकृत भाषा की वह पूर्ण पण्डिता होगई। यहाँ तक कि जैन धर्म के समस्त शास्त्र, महाभारत, सूत्र और इतिहास इत्यादि का पूर्ण ज्ञान होगया, परन्तु चित्र खींचने और मूर्ति गढ़ने के काम से उसे विशेष प्रेम था। उसके अधिकांश समय इसी काम में व्यतीत होता था। राजारानी दोनों उसके काम को देखकर बहुत ही प्रसन्न होते थे। देबशाल नगर में जितने मन्दिर थे सब में उसने अपने हाथ की बनाई हुई मूर्तियाँ भेजी थीं।

कलावती अब सोलह वर्ष की होगई। उसका मुख पूर्णिमा के चांद के सदृश्य प्रकाशवान था। देखने वाले दाँतों उँगली दबाते थे। जो उसकी ओर दृष्टि करता था टक टक देखता रह जाता था। राजा रानी दोनों को उसके विवाह की चिन्ता हुई परन्तु आस पास से राजकुमारों में उस जैसा रूपवान कोई नहीं मिलता था। माता पिता चाहते थे कि वर भी वैसा ही रूपवान और सुन्दर हो जैसी कि कन्या है। वहुत दिनों तक देख भाल होती रही परन्तु इच्छानुसार कोई सुयोग्य वर नहीं मिला।

वह रात दिन इसी चिन्ता में रहते थे। देश देश के राजाओं के पास अपना पुरोहित भेजा। वह सब का चित्र ले आया परन्तु राजा रानी ने किसी को भी पसन्द नहीं किया और अब वह निराश से होने लगे।

एक दिन रानी ने अपनी लड़की से कहा, "तू जैसी सुन्दरीं है जान पड़ता है वैसा वर ब्रह्मा ने संसार में उत्पन्न नहीं किया। इतना खोजने पर भी कहीं अच्छा वर नहीं मिलता।" कलावती हँसी, "माताजी! सुन्दरता कई प्रकार की होती है। किसी का शरीर सुन्दर है। किसी का मन और हृदय सुन्दर है। किसी की बुद्धि सुन्दर है आपको कौनसी सुन्दरता चाहिये? माता बोली, 'जिसका शरीर, मन, बुद्धि सव कुछ सुन्दर हो।" कलावती सोच

विचार में पड़ गई थोड़ी देर पीछे कहने लगी, शरीर की सुन्दरता ही सब कुछ नहीं है। बाहिर मुखी मनुष्य इसी को सब कुछ समझते हैं। यह उनकी भूल है। हाँ मन बुद्धि और हृदय का सुन्दर होना आवश्यक है। जिसका मन और बुद्धि विचार सुन्दर है वह बहुत ही सभ्य, सुशील, बुद्धिमान विद्वान और गुणवान होता है और वह अपने शरीर को भी सुन्दर बना लेता है। जिसका मन बुद्धि और हृदय कुरूप, मलीन और भद्दा होता हैं उसका शरीर चाहे कितना ही सुन्दर क्यों न हो परन्तु उसकी कुरूपता, मलीनता और भद्देपन की झलक शरीर पर पड़ती है वह देखने में भद्दा, कुरूप और मलीन प्रतीत होने लगता है। माता जी ! तुम देखो संसार में जितने रोग हैं वह सब के सब मन ही से उत्पन्न होकर दुख और शोक के कारण होते हैं। तीन प्रकार के दुख केवल मन की अपवित्रता, अशुद्धता और मलीनता से उत्पन्न होते हैं। इसलिये मनुष्य को मन और बुद्धि की सुन्दरता पर मरना भूल और भ्रम है।

माँ बुद्धिमान, विचारवान और पढ़ी लिखी थी परन्तु लड़की की बात सुनकर दंग रह गई। उसने सोचा—"कलावती सयानी हो गई और वह चाहती है कि किसी न किसी के साथ उसका विवाह शीघ्र कर दिया जावे।" बात क्या थी और क्या समझी गई ! देखो ! इस संसार में ऐसे लोग वास्तव में बहुत कम होते हैं जो कहने वाले के सच्चे और यर्थात भाव की समझ रखते हैं। यही कारण है कि बहुधा मुनि गण चुप रहते हैं।

माँ को सोच विचार में पाकर कलावती बोली, माता जी ! आप सोच में क्यों पड़ी हैं ? इस सोच विचार का परिणाम क्या है ? जिसने मुझे जन्म दिया है उसने मेरे जैसा वर भी उत्पन्न किया होगा ! प्रकृति पुरुष की जायदाद है। कोई जायदाद बिना मालिक के नहीं रह सकती। यह प्राकृतिक नियम है। हां ! समय से पहिले कोई काम नहीं होता।"

रानी ने कहा, "तू बड़ी ज्ञानी है। मैं सीधी सादी और भोली भाली हूँ।

मेरी दृष्टि अपने धर्म की ओर है। मैं आज राजा से चलकर कहूंगी कि अब कलावती सयानी हो गई। उसका विवाह शीघ्र कर दो। देर न लगाओ। समय व्यर्थ नष्ट हो रहा है। यदि कोई उस जैसा रूपवान और सुन्दर नहीं मिलता तो किसी बुद्धिमान, शूरवीर साहसी और पराक्रमी राजपूत के साथ उसका बिवाह कर दिया जाये। कलावती का भी स्वयं ऐसा विचार है।" यह सुनकर कलावती लजा गई। उसने फिर अपनी माँ से कहा, मेरे चार प्रश्न हैं। जो कोई उनका उत्तर देगा मैं केवल उसी के साथ विवाह करूंगी।"

रानी ने जाकर राजा को सारी बातें सुना दी।

* २ *

राजा विजयसेन का एक लड़का था जिसका नाम जयसेन है। यह बड़ा उत्साही पुरुषार्थी, पराक्रमी, रूपवान और पवित्रात्मा था। और अन्य देशों में जाने का बड़ा ही प्रेमी था। यह अपनी बहिन को बहुत प्यार करता था और उसे सदैव प्रसन्न चित्त रखता था। एक दिन वह किसी मन्दिर में दर्शन करने गया था एक पथिक को देखा जो एकाग्रता के साथ ध्यान जमाये हुये उन मूर्तियों को देख रहा था जो कलावती ने अपने हाथ से गढ़ी थीं। हिन्दू इन्जीनियरी और कला कौशल के कामों से विशेष प्रेम नहीं रखते थे और न वह इधर ध्यान ही देते थे। यह जो कुछ तुम देखते हो जैनियों और बौद्धों की बुद्धि की विलक्षणता और उपज हैं। अब भी जैनी जितना धन द्रव्य अपने मन्दिरों के सुन्दर बनाने और उसके सजाने में लगा देते हैं हिन्दू उसका सौवाँ भाग नहीं कर सकते। उनमें इनमें आकाश पाताल का भेद है। बची खुची जो पुरानी इमारतें और सुन्दर २ मन्दिर रह गये हैं वह सब इन्हीं की कारीगरी के नमूने हैं। आबू पर्वत का मन्दिर देखो जो न केवल भारतवर्ष में किन्तु सारे संसार में अपने रङ्ग ढङ्ग का निराला और अद्वितीय है। रांची का स्तम्भ, हस्ती द्वीप (यलिफेंटा आइल) की गुफा, शिव भगवान की बड़ी २ मूर्तियां, बनारस के सारनाथ का विशाल स्तम्भ, बुद्ध गया का आश्चर्य जनक और बिलक्षण मन्दिर इत्यादि सब इनके कला कौशल के प्रेम

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

को स्मरण कराते रहते हैं। बहुतो का तो यह विचार है कि जगन्नाथपुरी व मन्दिर भी बौद्धों का है जो अब वैष्णवों के हाथ आ गया है। इन्जीनियरा के काम में जो भारतवर्ष का नाम जगत विख्यात है उसका मुख्य कारण जैनियों और बौद्धों की अपूर्व कारीगरी है। जयसेन ने उस पथिक की एकाग्रता को देखकर पूछा, "तुम दत्त चित्त होकर इतने ध्यान से मूर्तियों को क्यो देख रहे हो ?" वह बोला, यह सब किसी अच्छे कारीगर की बनाई हुई हैं। इनके देखने से पता लगता है कि मन की पवित्रता, सुन्दरता, निर्मलता शुद्धता और बुद्धिमानी की दृष्टि से अद्वितीय है। यही कारण है कि मैं इनको ध्यान से देख रहा हूँ।"

अभी बात चीत हो रही थी कि मन्दिर में किसी छुपे हुये सांप ने जयसेन के पांव को डस लिया। विष सारे शरीर में फैल गया और वह मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। देखने में वह मृतक तुल्य प्रतीत होने लगा। नाड़ी बन्द हो गई। आंखें पथरा गई मन्दिर के पुजारी इत्यादि सब घबरा गये। राजा रानी को भी इस घटना की सूचना मिली। सब आये। राजकुमार की अकाल मृत्यु पर विलाप करने लगे। इस पथिक ने कहा, "घबराओ नहीं ! मैं इसको अभी अच्छा किये देता हूं। इसे उठाकर बाहर ले चलो। यहां दम घुटता है।"

राजकुमार की लाश बाहर निकाली गई। नगर में कोलाहल मच गया। हजारों मनुष्य देखने को टूट पड़े क्योंकि जयसेन वहां के राजा का इकलौता लड़का था। चारों ओर रोना पीटना मच गया। यों तो पथिक ने सबको दिलासा दिया था परन्तु सांप बड़ा ही विषधर था। किसी को भी आशा नहीं थी कि राजकुमार अब फिर जी सकेगा। इतनी भीड़ भाड़ में केवल एक यही पथिक रह गया था जो शान्त चित्त दिखलाई देता था। और सब के सब घबराये हुये थे।

इसने अपनी झोली खोली। इसमें से जहरमुहरा निकाल कर सांप ने जहां काटा था लगा दिया। नीम के पत्तों का पखा झलने लगा। पंद्रह

मिनट पीछे जयसेन ने आंखें खोल दीं, देखा कि उसके चारों ओर हजारों मनुष्य एकत्रित हैं। पूछा, "यहाँ भीड़ क्यों लगी हुई है ?" जब उसने सब बातें सुनी सबसे पहिले उठकर उस पथिक को प्रेम के साथ छाती से लगाया जिसने उसकी प्राण रक्षा की थी। राजा रानी और सारी प्रजा ने उत्सव मनाया। राजकुमार पथिक को साथ लिये राजभवन में आया जहां उसका बड़ा ही आदर सत्कार किया गया। वह पथिक कुछ दिनों वहीं ठहरा रहा।

जयसेन ने उसे कलावती से मिलाया और जब राजकुमारी ने देखा कि मूर्ति बनाने और चित्रकारी के काम में वह निपुण है तो बहुत ही प्रसन्न हुई। वह इन विषयों में अपने में कुछ त्रुटि पाती थी इसलिये उसने इस पथिक से बहुत सी बातें सीख लीं।

इस पथिक का नाम दत्त था। वह शङ्खपुर के राजा का दरबारी था जिसका नाम शङ्ख था। वह बहुत दिनों से अति सुन्दर और मनोहर चित्र बनाने की धुन में था। इसी खोज में वह देश बिदेश घूमता फिरता हुआ देवशाल नगर में आया जहां उसकी मनोकामना पूर्ण हुई क्योंकि उसने कलावती के रूप में अपने मानसिक आदर्श का दर्शन पा लिया। उसने धीरे २ उसका चित्र खींच लिया और राजा विजयसेन से बहुत कुछ पारितोषिक पाकर अपने देश को लौट गया।

* ३ *

जब दत्त शङ्खपुर में पहुँचा और राजा को उसके आने की सूचना मिली उसने उसे बुला भेजा। यह आज्ञानुसार राज दरबार में पहुंचा। राज सिंहासन के आगे झुककर नमस्कार किया और आज्ञा पाकर एक उचित स्थान पर बैठ गया। साधारण बातचीत के पीछे राजा ने पूछा, "दत्त ! मैने सुना है तू पृथ्वी की परिक्रमा करने गया था। क्या अनोखी और विलक्षण बात देखी है ? मुझे भी बता।" दत्त बोला, "पृथ्वीनाथ ! मैं ब्योपार के लिये देवसाल नगर में गया था। आपसे क्या बताऊँ क्या देखा !

इतना ही नहीं किन्तु वह बड़ी सुशीला, पवित्रात्मा और धर्मात्मा है। ऐसे लोग संसार में हजारों वर्ष पीछे कभी जन्म लेते हैं। उसके समस्त गुणों का वर्णन करना कठिन ही नहीं किन्तु असम्भव है।"

शङ्ख ने कहा, "दत्त ! तू कवि है। कवियों की बातें अलङ्कार रूप में हुआ करती हैं। यह आकाश पाताल को एक कर देते हैं। उसके अनुपम सौंदर्य का कोई प्रमाण भी तेरे पास है या नहीं ?" दत्त ने उसका चित्र निकालकर राजा को दिखाया। वह देखते ही दंग रह गया। देर तक कोई बातचीत नहीं की। फिर सँभलकर दत्त से पूछा, "यह कुँवारी है या विवाहिता ?" दत्त ने उत्तर दिया, "अभी तक उसका विवाह नहीं हुआ। राजा रानी इसी खोज में हैं कि उस जैसा कोई सुयोग्य वर मिले तो विवाह कर दिया जाये परन्तु ऐसा रूपवान वर मिलना कठिन है क्योंकि ब्रह्मा ने उसके बनाने में अपनी सारी योग्यता लगा दी। लड़की बाहिरी रूप रंग को मुख्य नहीं समझती। उसके चार प्रश्न हैं। जो कोई उन प्रश्नों का उत्तर देगा वह उसी के साथ विवाह करेगी। शङ्ख ने पूछा, "तू राजभवन में कैसे चला गया था।" तब उसने जयसेन के साँप के काटने की घटना कह सुनाई और साथ ही यह भी कहा कि "जहाँ यह लड़की रूपवती और गुणवान है साथ ही पण्डिता और कला कौशल में भी पूर्ण है चित्र ऐसा अच्छा खींचती हैं कि चित्रकार भी देखकर दंग रह जाते हैं। नगर के सारे जैनी मन्दिरों में उसी के हाथ की बनाई हुई मूर्तियां सब जगह रखी हुई हैं। वह अपना सारा समय धर्म्म पुस्तकों के पढ़ने या मूर्तियों के बनाने में व्यतीत करती है।"

शङ्ख के मन में प्रबल इच्छा हुई कि किसी युक्ति से लड़की को देखना चाहिये। दत्त ने कहा, "राजन् ! देखना कैसा ? तुम उसके प्रश्नों का उत्तर दो और उसको ब्याह लाओ।"

शङ्ख—"परन्तु यह बात सहज नहीं है। क्या जाने वह क्या पूछ बैठे ! मुझसे उत्तर न बन आवे और उलटे मुझे लज्जित होना पड़े।"

दत्त—"बात तो ऐसी ही है परन्तु पुरुषार्थ अपना धर्म्म है।"

शङ्ख—"फिर कौन सी युक्ति की जाये ?"

दत्त—"सुनिये महाराज ! बिना तप के मान मिलता है न प्रतिष्ठा मिलती है। न विद्या आती है न ज्ञान प्राप्त होता है और फिर ऐसी लक्ष्मी तो तप के बिना किसी को किसी प्रकार मिल ही नहीं सकती।"

शङ्ख – "मैं कौन सा तप करूँ ?

दत्त—"आप जैन धर्म के अनुसार ब्रह्मचर्य का पालन करें और साथ ही सरस्वती देवी की आराधना कीजिये। इससे आपका मन पवित्र बुद्धि निर्मल और अन्तकरण शुद्ध हो जायेंगे जिस समय कलावती आपसे प्रश्न करेगी उसके मानसिक भाव का प्रतिबिम्ब आप ही आपके हृदय पर पड़ेगा और वाग देवी की कृपा से आप उसका उत्तर अवश्य दे सकेंगे। मूर्ख और अनसमझ मनुष्य तप की महिमा को नहीं जानते परन्तु आप जैनी हैं। जैन धर्म्म संसार का प्राकृतिक धर्म है और पूर्ण है। उसमें कोई बात ऐसी नहीं है जो असत्य या सिद्धान्त विरुद्ध हो। यह दूसरी बात है कि अनाड़ियों को उसकी समझ न आवे और वह अनुचित आक्षेप कर बैठें। यह आर्य धर्म है और सबसे श्रेष्ठ है। ऋषभदेव जी से लेकर महावीर स्वामी और दूसरे जिनेश्वरों ने तप किया था। तप करने से वह फटक शिला पर पहुँचे। ईश्वर हो गये। कौन सी बात हैं जो तप से नहीं मिलती ? तप के लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं है। तप ही धर्म है। तप ही कर्म है। तप ही ज्ञान, ध्यान, योग और व्रत है। शेष ने तप के बल से अपने सर पर सृष्टि का भार धारण कर रक्खा है। तप ही से ब्रह्मा जगत को रचता है। आपको भी इस संसार में सारे पुरुषार्थ का फल तप से ही मिला है। तप ही परम पुरुषार्थ है।"

शङ्ख—"दत्त ! तू सच कहता है। मैं तप करूँगा और सरस्वती मेरी मनोकामना पूर्ण करेगी।"

तप की व्याख्या बहुत बड़ी है। इसलिये उसे छोड़कर हम केवल इतना ही कहना चाहते हैं कि शङ्ख ने तप किया और व्रत के समाप्त होने पर देवशाल नगर दत्त के साथ जाने के लिये निश्चय कर लिया।

अब तक राजकुमारी का विवाह नहीं हुआ था। कोई उसके प्रश्नों का उत्तर देने वाला नहीं आया। माता पिता दिन रात सोच विचार में रहा

करते थे। हार मानकर विजय सेन ने लड़की का स्वयंवर रचा। देश देश के राजा आये। सबके रहने के लिये उचित स्थान दिया गया और उनके भोजनादि का उत्तमोत्तम प्रबन्ध किया गया।

दत्त उन प्रश्नों को पहिले से जानता रहा होगा। उसने अपनी कारीगरी से एक सन्दूक बनाया। उसके भीतर चार पुतलियां लगाईं और शङ्ख राजा को समझा दिया कि तुम्हें बोलने की आवश्यकता नहीं है, केवल कल को घुमा देना पुतलियां बारी बारी पर सन्दूक से निकालकर आप उत्तर दे लेंगी। शङ्ख को दत्त पर पूरा पूरा भरोंसा था और वह इसी विश्वास पर देवशाल नगर में आ गया।

मण्डप सजा हुआ है। मचानों पर राजे महाराजे विराजमान हैं। कलावती हाथ में जयमाल लिये इधर उधर एक बार चक्कर लगा आई परन्तु कोई भी आंखों में नहीं जँचा। शङ्ख दत्त के साथ एक जगह पर बैठा हुआ था। राजकुमारी ने दत्त को पहचान लिया, वह मुसकराई क्योंकि उसने भेष बदल रक्खा था।

तत्पश्चात कलावती की आज्ञा पाकर एक प्रतिहारी उठा और उसने ऊँचे स्वर में सबको सुना कर कहा :—

'प्रतिष्ठित महाशयो ! महाराज देवशाल सच्चे प्रेम के साथ आप सबको धन्यवाद देते हैं। धन्य है आज की घड़ी कि आपने कृपा करके मण्डप को सुशोभित किया है क्योंकि ऐसे उत्सव नित्य नहीं हुआ करते। इस स्वयंवर में राजकुमारी अपने लिये वर नहीं चुनेगी किन्तु उसने प्रण किया है कि जो मनुष्य उसके चार प्रश्नों का उत्तर देगा वही उससे विवाह करने का अधिकारी होगा। आप लोगों ने देख लिया। कलावती इस भूमण्डल की चाँद है। उस जैसी सुन्दरी और रूपवती कन्या इस संसार में नहीं है। इसके अतिरिक्त वह गुण, कर्म और स्वभाव की दृष्टि से भी अद्वितीय है। सच्चे अर्थ में वह साक्षात सौंदर्य की देवी है। जो कोई इस अमूल्य रत्न को पायेगा जीवन पर्यन्त अपने सौभाग्य को सराहता रहेगा। उसके चार प्रश्न हैं। जो

उनका यथार्थ उत्तर देगा। वही उसका पति होगा। प्रश्न यह हैं— (१) देव कौन है ? (२) गुरु कौन है ? (३) तत्व क्या है ? और (४) सत्व क्या है ? आप में से जो उत्तर देने की योग्यता और साहस रखता हो वह सामने आये और इनका यथार्थ उत्तर दे। वही कलावती का पति होगा।"

कई राजों ने ऊटपटाँग उत्तर दिये परन्तु कलावती के लिए वह उत्तर सन्तोषजनक नहीं थे। सब के सब एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। सभा में सन्नाटा छा गया। सुई भी गिरती तो उसका शब्द अवश्य सुनाई देता। यह दशा देखकर फिर प्रतिहारी ने कहा, 'सज्जनो ! यह चुपकी कैसी ? जिसको साहस हो वह बेधड़क उत्तर दे। यहां जाति पांत का आडम्बर नहीं है क्योंकि जैनधर्म इसको कुछ भी मुख्यता नहीं देता। जो उत्तर देना चाहे आगे आ जाये और अपने भाग्य की परीक्षा ले। इतना कहने पर भी सब के सब बैठे ही रहे।

तब दत्त ने शङ्ख की ओर देखा। वह बड़े बांकेपन के साथ अपने मचान से उठा। दत्त ने उसके सन्दूक को उठाकर बीच सभा में रख दिया। राजा शङ्ख सबको सम्बोधन करके बोला, "कलावती आप अपने मुख से प्रश्न करें। इस कला की सन्दूक में से जो यहां रक्खी हुई है पुतलियाँ निकलकर उसके प्रश्नों का यथार्थ उत्तर देंगी।" सब इस बात को सुनकर दंग रह गये। भरी सभा में राजकुमारियों के बोलने का रिवाज नहीं था। कलावती झिझकी और ठिठकी। कोई और उत्तर देने के लिये उद्यत नहीं था इसलिये बिजयसेन और श्रीमती ने कहा, "बेटी ! यह लज्जा की बात नहीं है। तू प्रश्न कर।" वह भी बीच सभा में आ गई।

कलावती—"देव क्या है बता दे पुतली ?"

एक पुतली (सन्दूक से निकलकर) 'वैत्तराग उसको बोलते हैं सखी।"

कलावती—"हैं गुरु कौन तू बता दे आज ?"

दूसरी पुतली—(निकल कर) "जिसने साजे हैं धर्म कर्म के साज।"

कलावती—"तत्व क्या वस्तु है बता प्यारी ?"

"तीसरी पुतली—(निकल कर) हिंसा से बच के रहना ऐ आली !"

कलावती—"और परम तत्व की कहानी सुना ?"

चौथी पुतली—(निकल कर) "इन्द्रियों के दमन का तप वह हुआ।"

सब दंग ! किसी की समझ में कोई बात नहीं आई। भानमती के पिटारे का जादू देखकर सब चकित थे आज तक कभी ऐसा स्वयंवर न आँखों देखा न कानों सुना। जादूगर का खेल है या क्या है ? पुतलियाँ राजकुमारी के शब्द पर शङ्ख के सन्दूक में हाथ लगाते ही नाचती, कूदती, फुदकती और गाती हुई बाहर आती हैं और उत्तर देकर फिर सन्दूक में समा जाती हैं 'वैतराग देव है। जो महाव्रत धारण करे वह 'गुरू' है। सब पर दया रखना, जीव धर्म का पालन करना और हिंसा से बचना यह 'तत्व' है। अपने आपको वश में रखना, इन्द्रियों पर अधिकार पाना, संसारी विषय भोग का त्याग करना बुरी वासनाओं का पराजित करना यह 'सत्व' है। यह जैन धर्म के चार मुख्य सिद्धान्त हैं। जो इनको समझ ले वही जैनी है। "जिन" शब्द का अर्थ है—'इन्द्रियों को जीतना।' जो इन्द्री जीत ले वही जिन है और जैनी है और जिसमें यह गुण नहीं हैं हम उसको जैनी नहीं कहते। संसार भले ही कहा करे। मूर्खों और अनसमझों ने जैन धर्म का आदर्श नहीं समझा। यह बिना समझे बूझे आक्षेप करते रहते हैं। विवेकी और विचारवान मनुष्य को चाहिए कि यह केवल सिद्धान्त पर दृष्टि रक्खे और इस दृष्टि जिन धर्म संसार का बहुत बड़ा

सुधारक और सच्चा धर्म प्रचारक है। जिसने इन चार बातों को समझ लिया और उनको अपने जीवन का अङ्ग सङ्ग बना लिया वही जिनेश्वर और महा मुनि ऋषभदेव का अनुयायी महा तपस्वी पार्श्वनाथ का शिष्य और महा ज्ञानी और महर्षि महावीर स्वामी का सच्चा नाम लेवा है।

राजा और रानी के मन की कली खिल गई। जयसेन, दत्त और सारे नगर निवासी प्रसन्न हो गये। शङ्ख ने अपनी तपस्या का फल पा लिया। कलावती का हृदय प्रेम से पूर्ण था। वह मन्द मन्द मुस्कराती और हस की चाल चलती हुई शंख के सामने पहुंची और उसके गले में जयमाल डाल दी।

चारों ओर आनन्द ही आनन्द था। दोनों का विवाह हो गया। सारे नगर में चहल पहल और धूम धाम थी। और राजों और महाराजों की मनो कामना पूर्ण नहीं हुई परन्तु फिर भी वह प्रसन्न थे क्यों उनकी दृष्टि में शंख ही इस राज कन्या के लिये सुयोग्य वर था। यह विवाह सबके लिये आनन्द दायक था। सब राजा रानी और दूल्हा दुल्हिन को बधाई देने लगे। ससुराल में कुछ दिन रहकर शंख अपनी नई नवेली दुलहिन के साथ अपने नगर में लौट आया। वहाँ दोनों सुख सम्पन्न जीवन व्यतीत करने लगे। राजा ने दत्त को अपना मन्त्री बनाया परन्तु उसने इस पदवी को ग्रहण करते समय कह दिया कि जब उसका जी चाहेगा वह घूमने फिरने के लिये देश विदेश चला जायेगा।

* ५ *

सूर्य और चन्द्रमा का मिलाप हो गया। पति की राजधानी में पहुंचकर कलावती ने कलाकौशल के बहुत से पाठशाले खोल दिये। इन सबकी देखभाल और उचित प्रबन्ध के लिये दत्त नियत किया गया। रानी ने कई विहार भी बनवाये जिनमें भिक्षु और भिक्षुनियां

पढ़ा करती थीं। दुखी और रोग ग्रसित मनुष्यों और पशुओं के लिये बहुत से औषधालय भी जगह-जगह खुल गये। नये नये धर्म-शाले, मन्दिर, पुल, तालाब कुयें और सड़कें भी बन गई शंखपुर की उन्नति दिन दूनी और रात चौगुनी होती गई।

एक दिन रानी ने राजा से कहा, "महाराज! आज रात को मैंने विचित्र स्वप्न देखा है। कोई बात समझ में नहीं आती।" राजा ने पूछा "वह क्या है?" रानी बोली, "मैं सो रही थी। देवता आकाश मण्डल से उतरे और एक अमृत का घड़ा मुझको देकर कहने लगे—ऐ रानी! इस घड़े में अमृत भरा है जिससे तुझको और तेरे पति को अमर पद प्राप्त होगा और तुम दोनों का नाम बहुत दिनों तक संसार में प्रसिद्ध रहेगा।" राजा मुस्कराया 'मैं समझ गया। तुम गर्भवती हो गई हो तुम्हारे पेट में कोई महा तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होगा। ऐ रानी! मुझे भी बहुत दिनों से यही अभिलाषा थी। आज इस समाचार को सुनकर मेरा मन प्रफुल्लित हो गया। वह शुभ घड़ी आये कि मेरी मनोकामना पूरी हो।" रानी ने कहा, महाराज! मैं तो सुना करती थी कि केवल स्त्रियों को ही पुत्र की इच्छा होती हैं परन्तु यहां उल्टी बात दिखलाई देती है। मैं धर्म्म को अपना पुत्र समझती हूं और उसी को पालती रहती हूं। आप उसके बिरुद्ध पुत्र की इतनी लालसा रखते हैं। धर्म्म ही संसार में सब कुछ है। धर्म्म न हो तो कुछ भी नहीं।"

रानीं की बातें सुनकर राजा लज्जित हो गया परन्तु अपने मन में बहुत ही प्रसन्न हुआ कि उसकी रानी बड़ी धर्मात्मा और विचार शील है।

* ६ *

संसार में किसी बात का ठिकाना नहीं। यह संसार समुद्र है जिसमें ज्वार भाटे सदैव उठा करते हैं। लहरें कभी ऊपर जाती हैं कभी नीचे। ठीक यही दशा मनुष्य के चित्त की भी है। कभी

प्रसन्न है कभी अप्रसन्न ! प्रेम, घृधा, राग द्वेष साथ साथ चलते हैं। आज जो दशा है सम्भव है कल वह न रहे। कल जो अवस्था होगी सम्भव है परसों न रहे। ऐसी दशा में कौन इसका विश्वास करे ! और कैसे करे !

जयसेन को कई महीने पीछे अपनी बहिन से मिलने का ध्यान आया। उसने माता श्रीमती से अपना विचार प्रकट किया। वह स्वयं बहिन के पास जाना चाहता था परन्तु माँ बाप ने रोक दिया। राजा ने अपने कई विश्वास पात्र मनुष्यों को शंखपुर में भेजा। उन्होंने यहाँ आकर राजा शंख से प्रार्थना की कि 'कलावती को उसके मां बाप और भाई देखना चाहते हैं। आप कुछ दिनों के लिये उसे विदा कर दीजिये।' परन्तु शंख ने इनकार कर दिया। वह नहीं चाहता था कि रानी उसकी आँखों से ओझल हो। हार मान कर वह सब लौट गये।

जयसेन ने अपनी बहिन के लिए दो बहुमूल्य साड़ियाँ बनवाई थीं जिनको उसने उन्हीं लोगों के हाथ कलावती के पास भेजा। साड़ियाँ बहुत ही अच्छी थी और उसमें जगह जगह बेल बूटों के रूप में जयसेन का नाम लिखा हुआ था इन्हें पाकर वह बहुत ही प्रसन्न हुई और नहा धोकर एक साड़ी पहन ली। अपने सामने दर्पण रखकर सखियों से कहने लगी, 'इस साड़ी से सच्चे प्रेम की बू बास आती है। जिसने इसको भेजा है वह मुझे मन से प्यारा है और वह मुझको भी सच्चे हृदय से प्यार करता है। यही कारण है कि यह मेरे मन को बहुत भाती है।" होने वाली बात होकर रहती है। राजा शंख भी उस समय रानी के महल की ओर आ रहा था। उसने सारी बातें सुन ली। मन में कहने लगा, 'आहा ! कलावती किसी और को प्यार करती है। वह इसको मन से प्यारा है और यह भी उसको प्यारी है। उसका प्रेम मेरे साथ झूठा और बनावटी है।

(शेष अगले अंक में देखिये)

महर्षि शिवब्रतलाल कृत हिन्दी पुस्तकें

आध्यात्मिक पुस्तकें

सम्पूर्ण महारामायण	१०)
श्री मद्भगवद्गीता भाग १	१)५०
” भाग २	१)५०
नानक योग ३ भाग	४)
राधास्वामी योग ६ भाग	८)
कबीर योग प्रथम भाग	२)५०
” द्वितीय भाग	२)७५
” तृतीय भाग	१)७५
कबीर आद्य ज्ञान प्रकाश	३)
शरणागति योग	)७५
उपासना योग	१)
कर्म रहस्य	१)
आनन्द योग प्रकाश	२)५०
Light on Anand yog	३)
पंथ संदेश	३)
सहज भक्ति	१)
आत्मिक प्रायमर	१)
दयाल योग (उर्दू)	२)५०

उच्चकोटि के उपन्यास

शाही भूत	१)५०
शाही डाकू	३)७५
शाही लकड़हारा सजिल्द	४)६२
शाही भिखारी	३)५०
...ी जादूगरनी	२)५०
आबदार मोती	२)५०
ताबदार मोती	२)५०
झलकदार मोती	३)
गिरहदार मोती	१)२५
रंगदार मोती	२)५०
दलदार मोती	३)७५
कजदार मोती	३)
चमकदार मोती	२)५०
हिसक मोती	२)५०
ओ३म नाविल	३)
शाही भक्तिनी	२)५०
शिवजी की अद्भुत कहानी	१)५०
सिंध देश की कहानियाँ	१)२५

पाठ तथा गाने के शब्द

शिव शब्द सागर	
सजिल्द भाग १ व २	७) ७)
फकीर भजनावली	१)५०
शब्द गुंजार भाग १, २, ३,	५)
शब्दों का गुटका	)६०
नन्दू भाई की साखी	१)५०
पिंगल साखी	१)
सन्त कबीर की साखी	३)
कबीर गूढ़ शब्द व्याख्या	१)५०
कबीर शब्दावली	२)२५
नैय्यरे आजम	१)५०
रहिमन नीति दोहावली	)७५
सन्त शब्दावली	०)५

Regd. No. L-ALG—28

पुस्तकें

हमारे यहां

महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज

कृत

हिन्दी की आध्यात्मिक, धार्मिक, स्त्री उपयोगी, स्वास्थ्य व मनोविज्ञान सम्बन्धी पुस्तकें तथा 'शाही' और 'मोती' सिलसिले के उपन्यास तथा परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज कृत उच्च कोटि की अमूल्य पुस्तकें मिलती हैं।

पूरा सूचीपत्र मंगायें।

डाक खर्च सब का अलग है।

पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक या रेल से भेजी जाती हैं।

मिलने का पता :—

कार्यालय

मनुष्य बनो

शिव भवन, लेखराजनगर,

अलीगढ़ (उ० प्र०)

ग्राहक सं. 1725

श्री Sri Chilwar Narsimlu Book-seller

At Po & Tag Banswara

Dist. Nizamabad.

AP.

सम्पादक — प्रभूदयाल मीतल

व्यवस्थापक व प्रकाशक—

श्रीमती सुधा मीतल,

शिव भवन, लेखराज नगर

अलीगढ़।